1

राज़ ये मुझ पे आश्कारा है
इश्क़ शबनम नहीं शरारा है

रक्स में है जो सागर-ओ-मीना
किसकी नज़रों का ये इशारा है

ऐसी मंजिल पे आ गया हूँ जहाँ
तेरे गम का ही इक सहारा है

लौट आये हैं यार के पे से
वक्त ने जब हमें पुकारा है

नाव टकरा चुकी हैं तूफ़ा से
अब तो मुर्शिद का ही सहारा है

इश्क़ करना है मात खा जाना
इसमें जीता हुआ भी हारा है

अपने 'दर्शन' पे इक निगह-ए-करम
वो गम-ए-जिंदगी का मारा है

2

महब्बत की मता'-ए-जाविदानी ले के आया हूँ
तेरे कदमों में अपनी जिंदगानी ले के आया हूँ

कहां सीमो-गुहर जिनको लुटाऊं लाके कदमों में
बराए नज़्र , अश्कों की रवानी ले के आया हूँ

तुझे जो फ़ैसला देना हो , दे ए दावरे-महशर
मैं अपने साथ अपनी बे- जबानी ले के आया हूँ

मेरे जख्मे-तमन्ना देख कर पहचान लो मुझको
तुम्हारी ही अता-करदा निशानी ले के आया हूँ

मेरे अशआर में मुजमिर हैं लाखों धड़कनें दिल की
मैं इक दुनिया का ग़म दिल की जबानी लेके आया हूँ

महब्बत नाम है बेताबी ए दिल के तसल्सुल का
महब्बत की मैं 'दर्शन' ये निशानी ले के आया हूँ

3

गुलों पे ख़ाके मेहन के सिवा कुछ और नहीं
चमन में यादे चमन के सिवा कुछ और नहीं

ये शाम-ए -ग़ुरबत-ए- दिल है , यहाँ चराग़ कहाँ
ख़याले सुबहे-वतन के सिवा कुछ और नहीं

दयारे इश्क़ में तुम क्यूं खड़े हो एहले हवस
यहाँ तो दार-ओ-रसन के सिवा कुछ और नहीं

करें तलश-ए-जूनूँ , जुल्मते-खिरद से कहो
जूनूँ किरन है , किरन के सिवा कुछ और नहीं

हमारी नगमा सराई के वास्ते 'दर्शन '
हवाए गंग ओ जमन के सिवा कुछ और नहीं

4

तेरे बगैर तो मेरा अजीब आलम है
कि जिंदगी कि मसर्रत , न मौत का ग़म है

तरस रहा हूँ मैं इक लम्हा ए सुकूँ के लिए
ये जिंदगी तो नहीं , जिंदगी का मातम है

तेरे निसार , मुझे तूने बक्श दी जन्नत
तेरा ख़याल ही रंगीनियों का आलम है

वो और हैं जिन्हें अपना ही ग़म है ए हमदम
हमारे दिल में तो सारे जहान का ग़म है

मिज़ाजे दोस्त की रंगीनियाँ बताएं क्या
कभी वो शोअला है यारो , कभी वो शबनम है

अता हुआ है जो दस्त - ए-नाज़ से 'दर्शन '

मुझे वो जाम-ए- सिफाली ही सागरे-जम है

5

महब्बत की हर चीज़ हुस्न- आफरी है
महब्बत की दुनिया सरासर हसीं है

है जन्नत की अजमत निगाहों में लेकिन
वतन की जमीं फिर वतन की जमीं है

ये गुलशन , ये रौनक , ये बादे बहारी
अगर तू नहीं है तो कुछ भी नहीं है

वफ़ा देर मेरा , वफ़ा मेरा काबा
वफा मेरा मजहब , वफा मेरा दी है

जमाने ने बदले बहुत रंग लेकिन
तेरे दर पे दर्शन की अब भी जबी है